ACCOUNTABILITY INITIATIVE

CENTRE FOR POLICY RESEARCH

संक्षिप्त • अंक 1 • 2021

बिहार

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एन.एच.एम)
- एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस)
- कोविड-19 महामारी सम्बंधित जानकारी

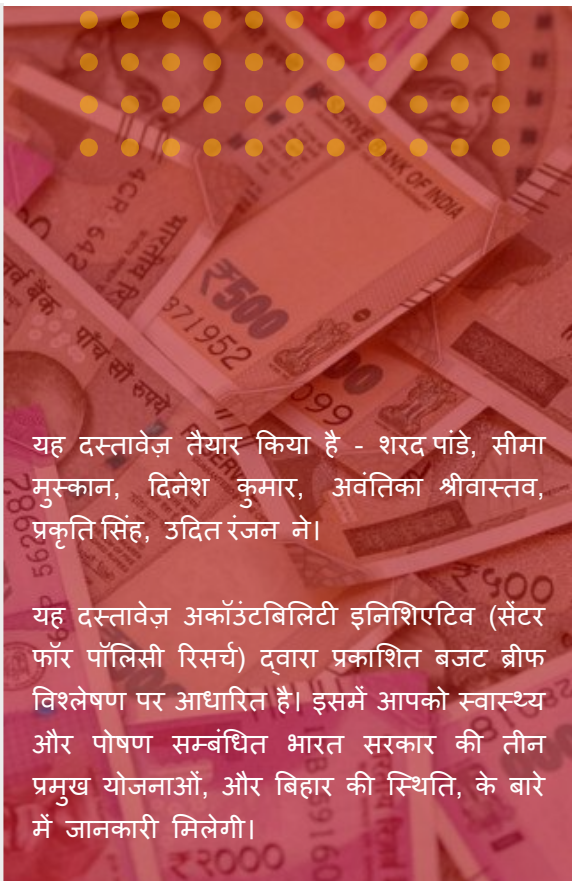

अकॉउंटबिलिटी इनिशिएटिव, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च,

धर्म मार्ग, चाणक्यपुरी,

नई दिल्ली - 110084

यह दस्तावेज़ तैयार किया है - शरद पांडे, सीमा मुस्कान, दिनेश कुमार, अवंतिका श्रीवास्तव, प्रकृति सिंह, उदित रंजन ने।

यह दस्तावेज़ अकॉउंटबिलिटी इनिशिएटिव (सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च) द्वारा प्रकाशित बजट ब्रीफ विश्लेषण पर आधारित है। इसमें आपको स्वास्थ्य और पोषण सम्बंधित भारत सरकार की तीन प्रमुख योजनाओं, और बिहार की स्थिति, के बारे में जानकारी मिलेगी।

कोविड-19 महामारी ने रोजमर्रा की जिंदगी को गंभीर रूप से बाधित कर दिया है। सरकारी योजनायें भी इससे अछूती नहीं रहीं हैं। अगले कुछ पन्नों में आपको स्वास्थ्य और पोषण से सम्बंधित भारत सरकार की अहम योजनाओं के ऊपर तथ्य आधारित निधि आवंटन, व्यय, और परिणाम पर जानकारी मिलेगी। हमें उम्मीद है कि आप 'संक्षिप्त' के ज़रिये इस जानकारी को अपने काम में उपयोगी पाएंगे।

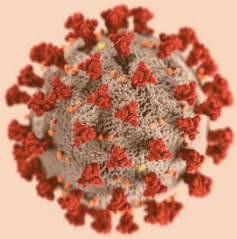

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एन.एच.एम)

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मई 2013 में भारत सरकार द्वारा लॉन्च किया गया था। यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका कार्यान्वयन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय करता है। इसका उद्देश्य देशभर में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली, सरकारी संस्थानों, और कार्यकर्ताओं की क्षमताओं को मज़बूत बनाना है ताकि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं लोगों तक पहुंचाई जा सकें।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत दो उप-मिशन हैं:

- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम) जो कि ग्रामीण भारत में सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए 2005 में शुरू किया गया था।
- राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (एन.यू.एच.एम) जो कि शहरी भारत के लिए 2013 में शुरू किया गया था।

एन.एच.एम मंत्रालय की सबसे बड़ी योजना है और कोविड-19 से जूझने में महत्वपूर्ण मानी गयी है।

भारत सरकार की तरफ से निधि आवंटन

- वित्त वर्ष 2021-22 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए आवंटन ₹73,932 करोड़ है (अनुमानित बजट[1] जिस को बजट एस्टिमेट्स भी कहते हैं), जो कि वर्ष 2020-21 के संशोधित अनुमान[2] (जिसको रिवाइज्ड एस्टिमेट्स भी कहते हैं) की तुलना में 11 प्रतिशत कम है। संशोधित अनुमान ₹82,928 करोड़ रुपए था।
- वित्त वर्ष 2021-22 में भारत सरकार ने एन.एच.एम के लिए ₹36,576 करोड़ आवंटित किए।

[1] अनुमानित बजट आगामी वित्त वर्ष में मंत्रालय या योजना के लिए बजट आवंटित धन के संभावित व्यय का पूर्वानुमान होता है।

[2] संशोधित अनुमान संभावित व्यय की मध्य वर्ष समीक्षा होता है। यह बाकी खर्च, नई सेवाओं और सेवाओं के नए साधन आदि को ध्यान में रखते हुए बनाया जाता है।

एन.एच.एम आवंटन में 4% की वृद्धि हुई (वित्त वर्ष 2020-21 से 2021-22)

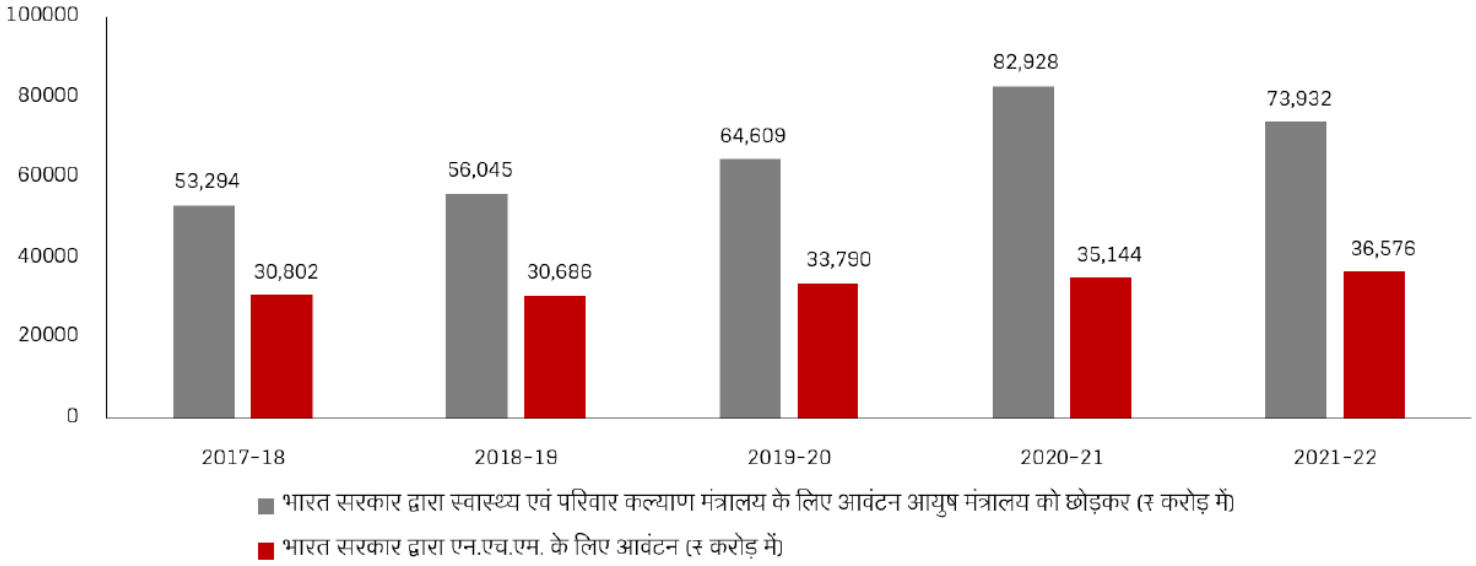

स्रोत: केंद्रीय व्यय बजट, खंड 2, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्त वर्ष 2015-16 से वित्त वर्ष 2021-22 तक। ऑनलाइन उपलब्ध: http://indiabudget.gov.in। दिनांक 1 फरवरी 2021 के अनुसार।

नोट: (1) आंकड़े करोड़ रुपये में हैं और संशोधित अनुमान हैं, वित्त वर्ष 2021-22 को छोड़कर, जो बजट अनुमान हैं। (2) स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए भारत सरकार के आवंटन में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय का आवंटन शामिल नहीं है।

- बिहार के लिए 5 जनवरी 2021 तक एन.एच.एम अनुमोदित धन का 45 प्रतिशत जारी किया गया।

कोविड-19 के लिए धनराशि

- कोविड-19 महामारी से जूझने के लिए भारत सरकार ने राज्यों को एन.एच.एम और राज्य आपदा राहत कोष (एस.डी.आर.एफ) का उपयोग करने की सलाह जारी की। 5 अप्रैल 2020 को भारत सरकार ने ₹15,000 करोड़ के आवंटन के साथ 'भारत कोविड-19 आपातकालीन प्रतिक्रिया और स्वास्थ्य प्रणाली तैयारी पैकेज' (इ.आर.एच.एस.पी.पी) की भी घोषणा की। इसका उद्देश्य वर्तमान में कोविड-19 के प्रकोप को कम करना ही नहीं, बल्कि भविष्य में आने वाली ऐसी और भी परिस्थितियों के लिए मज़बूत स्वास्थ्य प्रणाली का निर्माण करना है।
- इसे जनवरी 2020 से मार्च 2024 के बीच तीन चरणों में लागू किया जाना है। पहला चरण जनवरी 2020 से जून 2020 तक है, दूसरा चरण जुलाई 2020 से मार्च 2021 तक है, और तीसरा चरण अप्रैल 2021 से मार्च 2024 तक है। पहले दो चरणों के लिए ₹7,774 करोड़ आवंटित किए गए हैं।

- एन.एच.एम के तहत निधि का जारी होना राज्य सरकारों द्वारा प्रस्तुत योजनाओं पर आधारित है (यानि कि आर.ओ.पी[3])। राज्यों से एक 'आपातकालीन कोविड-19 रिस्पांस प्लान' (ई.सी.आर.पी) तैयार करने का भी अनुरोध किया गया है। उनके राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कुल संसाधन में से इसका हिस्सा 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।
- भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन आपातकालीन कोविड-19 रिस्पांस प्लान के लिए ₹6,028 करोड़ का अनुमोदन किया गया है। 1 जनवरी 2021 तक भारत सरकार ने ₹5,999 करोड़ (या अनुमोदित राशि का 99 प्रतिशत से अधिक राशि) जारी कर दी थी।
- छतीसगढ़, ओडिशा, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिमबंगाल, झारखंड, केरल, तेलंगाना, उतरप्रदेश, तमिलनाडु, और मध्यप्रदेश सहित 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशो में रिलीज का अनुपात आवटंन से अधिक था। इसके साथ ही असम, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटका, की अपेक्षा बिहार में देखे तो 113 प्रतिशत राशि जारी की गई थी।

आपातकालीन कोविड-19 रिस्पांस प्लान के तहत, 1 जनवरी 2021 तक बिहार के लिए कोविड-19 आवंटन का केवल 113% जारी हुआ

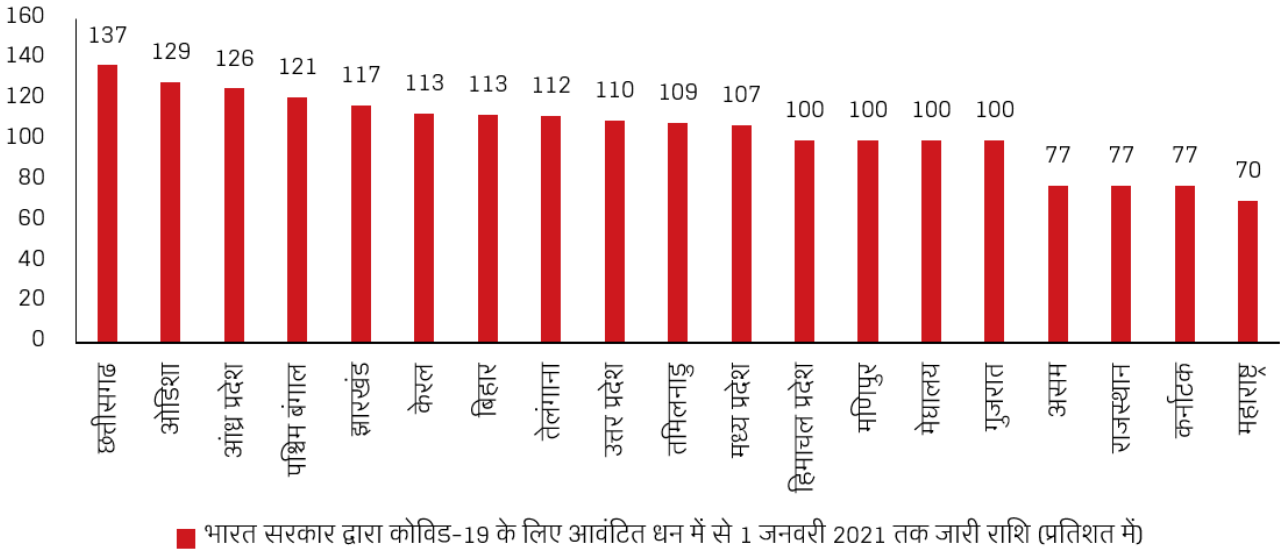

स्रोत: स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से आर.टी.आई से मिला डाटा। दिनांक 1 जनवरी 2021 के अनुसार।

नोट: आर.टी.आई के अनुसार कोविड -19 आवंटन ई.सी.आर.पी में उल्लेखित 'कुल बजट रिलीज़' के साथ मेल खाता है।

व्यय की स्थिति

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन में व्यय कम रहा है।** एन.एच.एम के तहत धनराशि जारी करना राज्य सरकारों द्वारा प्रस्तुत योजनाओं के प्लान पर आधारित है, जिन्हें राज्य कार्यक्रम कार्यान्वयन योजना (एस.पी.आई.पी) के रूप में जाना जाता है। वित्त वर्ष 2020-21 के लिए राज्य कार्यक्रम कार्यान्वयन योजना अनुमोदन ₹50,070

[3] भारत सरकार द्वारा अनुमोदित राज्य कार्यक्रम कार्यान्वयन योजना (एस.पी.आई.पी) को रिकॉर्ड ऑफ प्रोसीडिंग्स (आर.ओ.पी) कहा जाता है। इसमें कुल उपलब्ध संसाधन शामिल हैं (जिसकी गणना भारत सरकार के फंडों के आधार पर की जाती है), राज्य के योगदान का आनुपातिक हिस्सा और राज्यों के साथ उपलब्ध शेष राशि।

करोड़ था, जिसमें से 32 प्रतिशत (₹16,057 करोड़) 30 सितंबर 2020 तक, यानी वित्त वर्ष की पहली दो तिमाहियों, तक खर्च किया गया था। **बिहार कम खर्च करने वाले राज्यों में पहले स्थान पर था।**

बिहार में केवल 18% स्वीकृत धनराशि खर्च की गई (30 सितंबर 2020 तक)

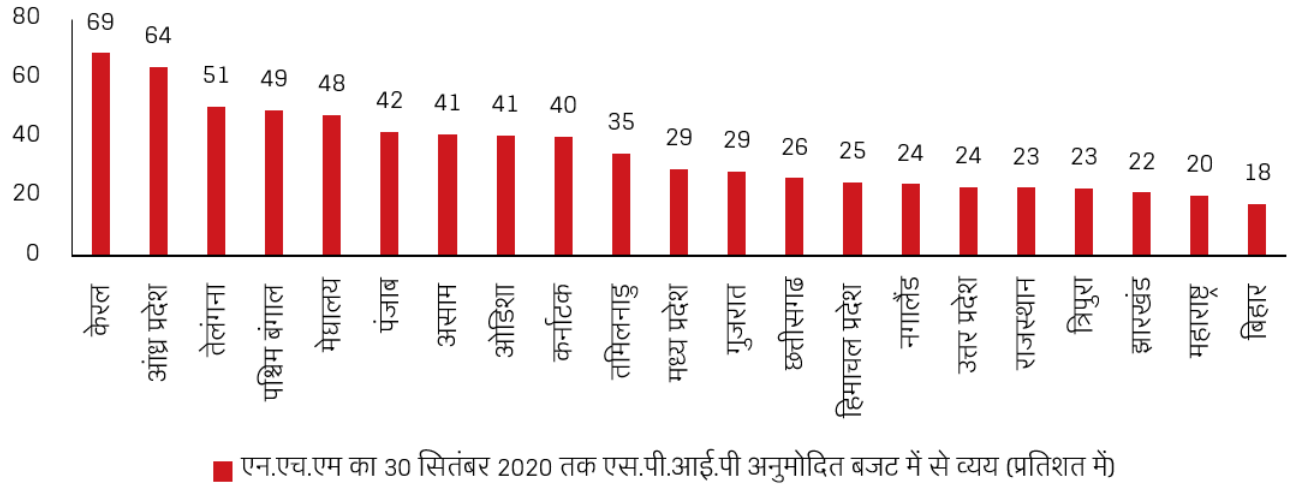

स्रोत: स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से आर.टी.आई से मिला डाटा। दिनांक 1 जनवरी 2021 के अनुसार।

भारत सरकार ने कोविड-19 के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत 1 जनवरी 2021 तक ₹44 प्रति व्यक्ति जारी किया। यह राशि बिहार के लिए ₹13 प्रति व्यक्ति थी।

आउटपुट और परिणाम

- **महामारी** में वेंटिलेटर, एन-95 मास्क, और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट) केंद्र सरकार से खरीदे जाने हैं। राज्यों को सलाह दी गई कि वे भारत सरकार से वेंटिलेटर की मांग करें। राज्यों ने अप्रैल 2020 में अपनी अनुमानित मांग प्रस्तुत की। **22 सितंबर 2020 तक बिहार को अपनी मांग के अनुरूप 100 प्रतिशत वेंटिलेटर मिल गए थे, तथा उनमे से 64 प्रतिशत प्रतिष्ठापित भी करवा दिए गए थे।**
- **कोविड-19 महामारी ने नियमित टीकाकरण कवरेज के विस्तार प्रगति को धीमा कर दिया।** मार्च और अप्रैल 2020 के बीच, नियोजित टीकाकरण सत्रों की संख्या 43 प्रतिशत घटकर 10.58 लाख से 6.02 लाख हो गई। **बिहार में इसमें 72 फीसदी की गिरावट आई।**
- प्रति व्यक्ति सरकारी डॉक्टरों और अस्पताल बेड की उपलब्धता की संख्या में कमी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ) के मानदंडों के अनुसार प्रति 1,000 लोगों के लिए कम से कम एक डॉक्टर होना चाहिए, और प्रति 1,000 लोगों के लिए पांच अस्पताल के बेड होने चाहिए।

- भारत में प्रति 11,268 लोगों के लिए एक सरकारी एलोपैथिक डॉक्टर है, और बिहार में यह संख्या 42,176 है।
- इसी तरह, भारत में हर 1,843 लोगों के लिए एक सरकारी अस्पताल बेड है, जबकि बिहार में यह आंकड़ा 10,096 लोग प्रति बेड है।

एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस)

एकीकृत बाल विकास योजना प्रारंभिक बचपन में शिक्षा, स्वास्थ्य, और पोषण सेवाएं प्रदान करता है। इस केंद्र प्रायोजित योजना का उद्देश्य 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर, रुग्णता, कुपोषण, और स्कूल छोड़ने की घटना को कम करना है। साथ ही इसका उद्देश्य माताओं की क्षमताओं को पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा के ज़रिये वृद्धि करना है, जिससे वे बच्चों की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा कर सकें।

भारत सरकार ने बजट 2021-22 में आई.सी.डी.एस और पोषण अभियान का पुनर्गठन किया, और सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 की घोषणा की। इसमें निम्नलिखित उप-योजनाएं शामिल हैं: तत्कालीन आई.सी.डी.एस, पोषण, किशोरियों के लिए योजना, और राष्ट्रीय शिशु गृह योजना। 'संक्षिप्त' तत्कालीन आई.सी.डी.एस योजना पर केंद्रित है।

आई.सी.डी.एस योजना में छह सेवाओं का पैकेज है। यह हैं: पूरक पोषण कार्यक्रम (एस.एन.पी); गैर-औपचारिक पूर्व विद्यालयी शिक्षा (पी.एस.ई); पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा; टीकाकरण; स्वास्थ्य जांच; और रेफरल सेवाएं।

पहली तीन सेवाएं महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रदान की जाती हैं, और शेष तीन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रदान की जाती हैं।

भारत सरकार की तरफ से निधि आवंटन

- वित्त वर्ष 2021-22 के अनुमानित बजट में भारत सरकार ने ₹24,435 करोड़ महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को आवंटित किये। सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण योजना 2.0 के लिए ₹20,105 करोड़ आवंटित किये गए। यह पिछले वर्ष के बजट अनुमान में इसके घटकों के जोड़ से कम है (जो ₹24,557 करोड़ था)। इसके अलावा ये वित्त वर्ष 2020-21 के बजट अनुमान में तत्कालीन आई.सी.डी.एस के लिए किये गए आवंटन से भी 2 प्रतिशत या ₹427 करोड़ कम है।

वित्त वर्ष 2021-22 में सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 को ₹20,105 करोड़ आवंटित किये गए

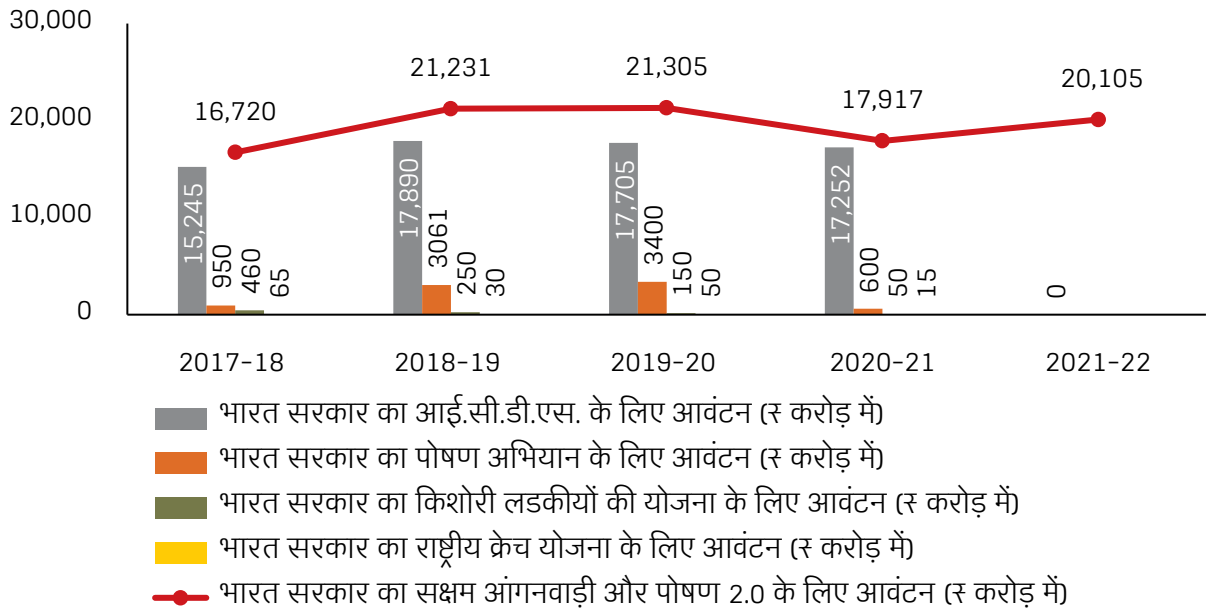

स्रोत: केंद्रीय व्यय बजट, खंड 2, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, वित्त वर्ष 2015-16 से वित्त वर्ष 2021-22 तक ऑनलाइन उपलब्ध: https://www.indiabudget.gov.in। दिनांक 1 फरवरी 2021 के अनुसार।

नोट: (1) आंकड़े करोड़ रुपये में हैं और संशोधित अनुमान हैं, वित्त वर्ष 2021-22 को छोड़कर जो बजट अनुमान हैं। (2) सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 वित्त वर्ष 2021-22 में शुरू किया गया था और वित्त वर्ष 2017-18 से वित्त वर्ष 2020-21 के लिए राशि आई.सी.डी.एस, पोषण अभियान, किशोरियों के लिए योजना और राष्ट्रीय शिशु गृह योजना के लिए आवंटन का योग है।

आई.सी.डी.एस घटक वार रिलीज

- 18 मार्च 2020 को सर्वोच्च न्यायालय ने उल्लेख किया कि बच्चों, गर्भवती महिलाओं, और स्तनपान कराने वाली माताओं को पौष्टिक भोजन की आपूर्ति ना करने से बड़े पैमाने पर कुपोषण हो सकता है, जिससे उन्हें कोविड-19 का भी अधिक खतरा है।
- पूरक पोषण कार्यक्रम आई.सी.डी.एस का सबसे बड़ा घटक है। महामारी के दौरान आंगनवाड़ी केंद्रों के बंद होने के बावजूद, यह कार्यक्रम टेक होम राशन और रेडी-टू-ईट भोजन के साथ जारी रहा। पूरक पोषण कार्यक्रम के लिए वर्ष 2020-21 में, दिसंबर तक, ₹6,625 करोड़ जारी किया गया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 3 प्रतिशत अधिक था।
- हालांकि पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में बारह राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को कम धनराशि प्राप्त हुई। **बिहार इनमें से एक था जिसको 24 प्रतिशत कम धनराशि प्राप्त हुई।**
- दिसंबर 2019 तक बिहार को पूरक पोषण कार्यक्रम के लिए भारत सरकार के अनुमोदित बजट का 80 प्रतिशत दिया गया था। वही दिसंबर 2020 तक 55 प्रतिशत दिया गया था।
- आई.सी.डी.एस-सामान्य कोविड-19 महामारी से काफी प्रभावित रहा। दिसंबर 2019 और दिसंबर 2020 के बीच इसके लिए भारत सरकार से रिलीज़ फंड में 14 प्रतिशत की कमी आई। वित्त वर्ष 2020-21 में दिसंबर

तक 23 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कम धन प्राप्त हुआ। बिहार में 16 प्रतिशत गिरावट देखने को मिली।

वित्त वर्ष 2019-20 से वित्त वर्ष 2021-22 के बीच बिहार में आई.सी.डी.एस-सामान्य और एस.एन.पी में 16% और 24% की गिरावट हुई

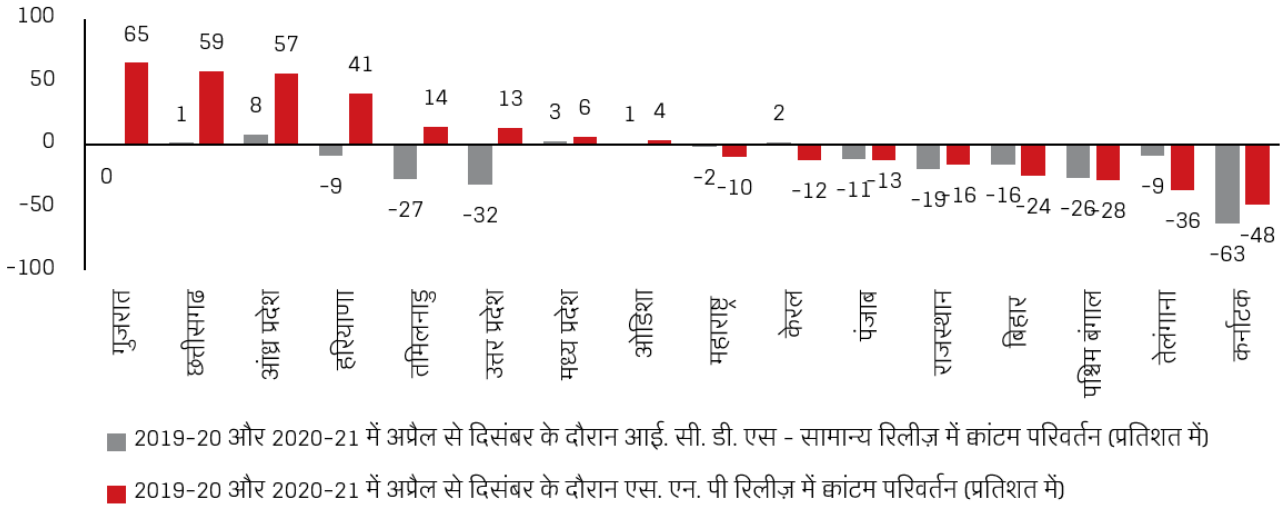

स्रोत: आई.सी.डी.एस सामान्य और एस.एन.पी रिलीज़ का डाटा 2019-20 और 2020-21 के लिए आई.सी.डी.एस वेबसाइट पर ऑनलाइन उपलब्ध: https://icds-wcd.nic.in/finance.aspx। दिनांक 14 जनवरी 2021 के अनुसार।

व्यय की स्थिति

- फरवरी 2021 तक, व्यय पर अद्यतन डाटा की सार्वजनिक उपलब्धता नहीं थी। सूचना का अधिकार (आर.टी.आई) कानून का उपयोग किया गया। आवेदन को राज्य सरकारों को स्थानांतरित कर दिया गया क्योंकि भारत सरकार पूर्ण राज्य-वार और घटक-वार डाटा को नहीं बनाए रखती है।

कवरेज

- भारत में कोविड-19 महामारी ने पूरक पोषण कार्यक्रम लाभार्थियों से अधिक पूर्व विद्यालयी शिक्षा लाभार्थियों को प्रभावित किया। मार्च 2020 और जून 2020 के बीच, पूरक पोषण कार्यक्रम लाभार्थियों की संख्या में 3 प्रतिशत की गिरावट आई। पूर्व विद्यालयी शिक्षा लाभार्थियों की संख्या में 34 फीसदी गिरावट आई।
- जून 2019 (महामारी से पहले) और जून 2020 (देशव्यापी तालाबंदी समाप्त होने का महीना) की राज्य-वार तुलना में पाया गया कि **पूरक पोषण कार्यक्रम लाभार्थियों की संख्या में बिहार में 31 प्रतिशत की**

वृद्धि हुई। वहीं पूर्व विद्यालयी शिक्षा के लाभार्थियों की संख्या में 28 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली।

- कोविड-19 महामारी के कारण अन्य सेवाएँ भी देशव्यापी तालाबंदी से प्रभावित थीं। इनमें शामिल थे नवजात शिशुओं का वज़न लेना और ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण दिवस (वी.एच.एस.एन.डी) को आयोजित करना।
- बिहार में मार्च 2020 और अप्रैल 2020 के बीच नवजात शिशुओं के वज़न लेने में 33 प्रतिशत की गिरावट आई।

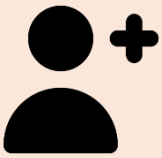

लॉकडाउन के अंत - यानी 30 जून 2020 - तक भारत में बाल विकास परियोजना अधिकारी (सी.डी.पी.ओ) के लिए स्वीकृत पदों में से 29 प्रतिशत और लेडी सुपरवाइजर के लिए स्वीकृत पदों में से 32 प्रतिशत पद रिक्त थे। बिहार में यह आँकड़ा सी.डी.पी.ओ के लिए 29 प्रतिशत और लेडी सुपरवाइजर के लिए 48 प्रतिशत था।

परिणाम

- आई.सी.डी.एस योजना का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों के पोषण परिणामों में सुधार करना है। ऐसे कई संकेतक हैं जो पोषण संबंधी स्थिति सूचित करते हैं, जैसे कि स्टंटिंग और वेस्टिंग।
- बिहार में 2019-20 में पांच साल से कम आयु के बच्चों में स्टंटिंग (या उम्र के हिसाब से कम उचाई) का आँकड़ा 43 प्रतिशत था। इसी तरह वेस्टिंग (या उम्र के हिसाब से कम वजन-ऊंचाई) का आँकड़ा 23 प्रतिशत था।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एन.एफ.एच.एस) के माध्यम से जनसंख्या, स्वास्थ्य, और पोषण पर व्यापक जानकारी एकत्र की जाती है। सर्वेक्षण के दौरान महिलाओं और छोटे बच्चों सम्बंधित संकेतक पर ज़ोर दिया जता है। एन.एफ.एच.एस-4 (2015-16) और एन.एफ.एच.एस-5 (2019-20) के बीच तुलना से पता चलता है कि बिहार में स्टंटिंग में 5.4 परसेंटेज पॉइंट्स की गिरावट आयी और वेस्टिंग में 2.1 प्रतिशत वृद्धि हुई।

हमसे जुड़ें

www.accountabilityindia.in

@accountabilityindia

@Accountability Initiative, Centre for Policy Research

@AccInitiative

हमारे बारे में

अकॉउंटबिलिटी इनिशिएटिव एक अनुसंधान समूह है जो 2008 से शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही को मजबूत करने पर काम कर रहा है। हमने भारत में कुशल सार्वजनिक सेवाओं के वितरण को प्रभावित करने वाली राज्य क्षमताओं और कारकों पर साक्ष्य-आधारित अनुसंधान के माध्यम से ऐसा किया है। हमने बहु-क्षेत्रीय सामाजिक विषय: जैसे शासन प्रक्रिया और बजट पर अध्ययन किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता जैसे सामाजिक क्षेत्रों को हमने बारीकी से देखा है। हम 5 राज्यों - बिहार, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में कार्यरत हैं।

हमारी कोशिश उत्तरदायी शासन को सक्षम करने की है। हमारा मानना है कि उत्तरदायी शासन हासिल किया जा सकता है यदि सरकारी संस्थान पारदर्शी और जवाबदेह तरीके से बनाए जाएं और नागरिक मांगों के प्रति जवाबदार हों। इसके साथ ही जागरूक नागरिक की भूमिका इस जवाबदेही व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण है।

हम सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च का हिस्सा हैं, जो भारत की प्रमुख सार्वजनिक नीति थिंक टैंकों में से एक है।

बजट ब्रीफ्स के बारे में

हम बजट ब्रीफ्स को हर साल प्रकाशित करते हैं। सरकारी डेटा का उपयोग करते हुए, यह संक्षेप में आवंटन, सार्वजनिक व्यय, आउटपुट और प्रमुख सामाजिक क्षेत्र के कार्यक्रमों के परिणामों का विश्लेषण देते हैं।